महावीर गाथा

अर्थात्

रुद्रावतार श्री बजरंगबली जी महाराज की

जीवन झांकी

लेखक—

शिवनन्द शर्मा,

प्रकाशकः—

पं० बद्रीप्रसाद शर्मा,

जगन्नाथ जी का मन्दिर, परेड के मैदान के सामने, देहली।

१९४५]   [मूल्य ।-)
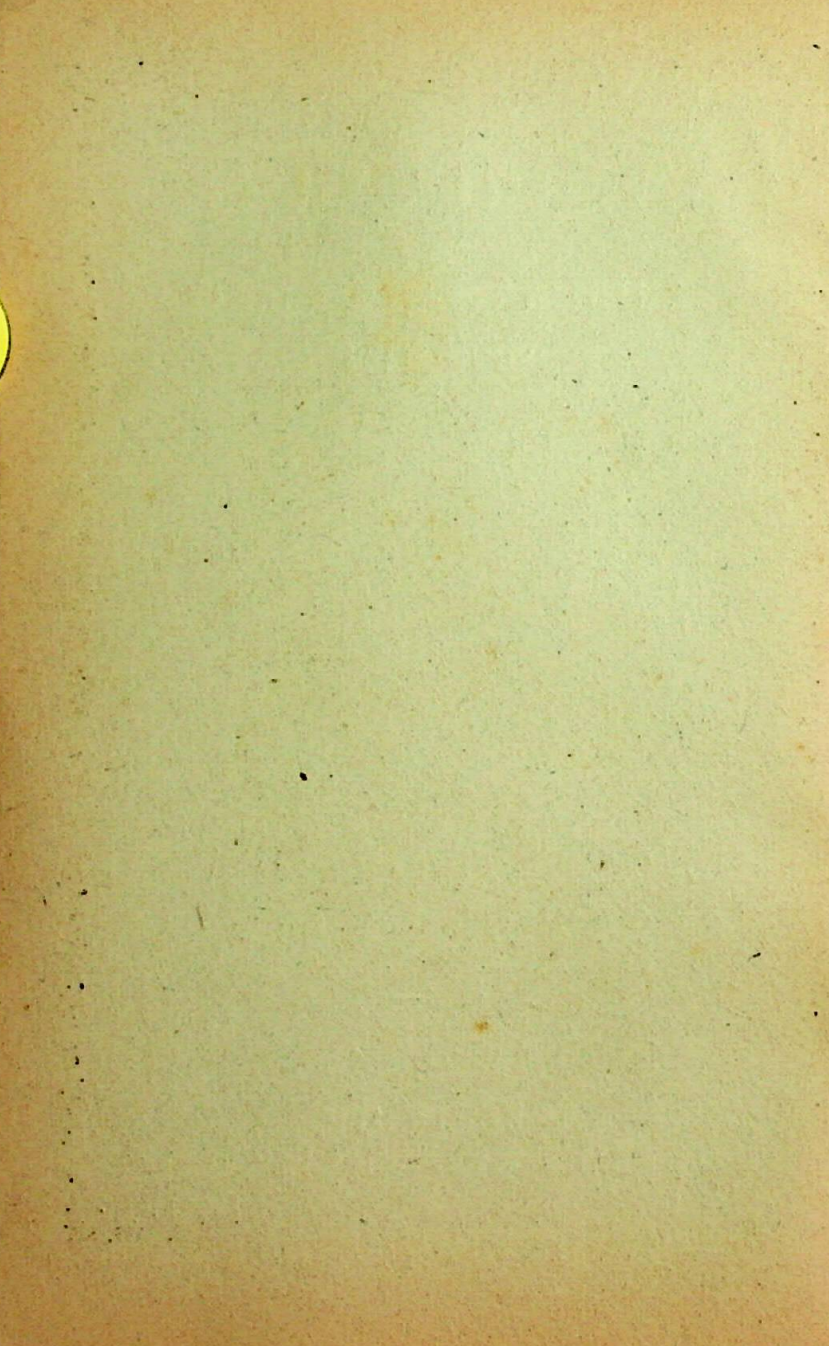
* ॐ *

जिनका आदर्श चरित्र

भारतियों की महानतम निधि है। जो
तिमिराच्छादित हिन्दू हृदयों के लिये
जगमगाते हुए सूर्य हैं। जो
मां सीता के प्राणाधार
और श्री हनुमानजी
के उपास्य
देव हैं।

उन्हीं सत्यम् शिवम् सुन्दरम् सीतापति
श्री भगवान रामचन्द्र जी के
चरण कमलों में
सादर भेंट।

पाठकों से

प्रिय पाठक गण !

आपकी सेवा में "रुद्रावतार श्री बजरंग बली जी" का जीवन चरित्र उपस्थित है। इसके विषय में केवल यही निवेदन है कि इसके लिखने की प्रेरणा स्वयं वीर जी महाराज ने की थी। अतः इसमें कहां तक सफलता प्राप्त हुई है, इसको भी वही सर्व अन्तर्यामी सर्व समर्थ प्रभु ही जानते हैं।

हां ! मैं आप लोगों से इतनी प्रार्थना अवश्य करूंगा कि इसे कम से कम एक बार पढ़ अवश्य लें। और यदि हो सके तो नित्य पाठ में रखलें। नित्य पाठ में रखने से एक ही वर्षोपरान्त आपकी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी और यदि ऐसा न हो तो

मेरा नाम

शिवनन्द शर्मा

नहीं !

❀ श्री महावीरायनमः ❀

प्रथम अध्याय

दोहा—निर्विकार शंकर सगुण, जो प्रिय सकल समाज ।
दास रूप धरि वीर बनि, रघुवर कीन्हें काज ॥

रुद्र तन हनूमान की जय ।
पवन सुत महावीर की जय ।

॥ चौपाई ॥

एक बार सतयुग के माहीं, विष्णु प्रभू तप शम्भु धराहीं ।
वर्ष सहस दश धारि समाधी, करहिं विष्णु तप तजि जग व्याधी ।
शम्भु समाधि त्यागि हर्षाये, अति प्रिय वचन बोलि सिर नाये ।
चरण कमल हरि हर सिर दीन्हा, अति हर्षाय हरहि उर लीन्हा ।
कहहिं शम्भु यह कठिन कराला, केहि कारण तप कीन्ह दयाला ।
कहहिं विष्णु शङ्कर तें वाणी, जग कल्याण हेत सब सानी ।
त्रेता माहिं मनुज कर रूपा, दुष्ट दलन हित धरहु अनूपा ।
रावण नाम दुष्ट अति भारी, तेहिं अवसर अइहै तनु धारी ।
सो करिहै तव तप प्रभु भारी, तुम करिहौ तेहि अभय खरारी ।

दोहा—रावण जग में आवही, अद्भुत रूप बनाय ।
दशहु शीश निज काटि के, प्रभु तव पाद चढ़ाय ॥

रुद्र तन हनूमान की जय ।
पवन सुत महावीर की जय ।

॥ चौपाई ॥

कार्य अधूरा रहे प्रभु मोरा, तेहि हित प्रभु मैं करहुं निहोरा ।
कहहिं शम्भु हरि तें प्रिय वाणी, हर्षित हृदय अति जग हर्षाणी ।
विष्णु विश्वम्भर पद अविनाशी, एक रूप गुण एकहि राशी ।
तव मम काज एक नहिं दोऊ, केहि हित भ्रम प्रभु तव उर होऊ ।
यदपि दशानन भव बिच आवा, प्रभु तव चरण पकरि तरि जावा ।
स्वयं शक्ति धर अंश पठाऊँ, महावीर बन कार्य कराऊँ ।
रुद्र एक दश मम अवतारा, जग कल्याण हेतु तन धारा ।
हनुमत रूप धरौं तव कारण, दुष्ट निशाचर सकल विदारण ।
अंजनि उदर जाय मम अंशा, महावीर प्रकटें तेहि वंशा ।

दोहा—महावीर के रूप में धारूँ आप स्वरूप ।
सेवा सकल करौं तव धरि वानर जग रूप ॥

रुद्र तन हनूमान की जय ।
पवन सुत महावीर की जय ।

॥ चौपाई ॥

अतुलित बल बुधि तेजहु धामा, विष्णु भक्त सतदास हो रामा ।
प्रभु तुम होवहु धर्म महीशा, सर्व काज तव करहिं कपीशा ।
हो निश्शंक निर्भय हर जपहू, मैं प्रण धारि कहहुं ये वचहू ।
विष्णु धारि वर गये शुभ धामा, शम्भु लीन हिमगिरि विश्रामा ।
समय पाय त्रेता युग आवा, पवन तनय आ जन्म धरावा ।
भगवन शङ्कर सती समेता, उच्च श्रृंग पर वसहिं सचेता ।

क्रीडा करहिं अनेक प्रकारा, भई समाधि भंग इक वारा।
राम राम कह प्रभु उठि धावा, तिनहिं प्रेम लखि सती भ्रम छावा।
राम कवन जो प्रभुहिं उचारा, इन्हते कौन प्रबल जो धारा।
कहहिं शम्भु प्रिये तजि संदेहू, मैं उन दास जे जन्म धरेहू।
तेहि कर कारज करन मुनीशा, विविध रूप धरि प्रगटे ईशा।
पुनि केहि कारण रूप न धारूं, कत न सेवि निज जन्म सुधारूं।
सतयुग में अस वर मैं दीन्हा, वीर रूप धरि आउँ प्रवीना।

दोहा—सती शम्भु के वचन तें उर अति भयो विकल्प।
केहि विधि पूरन होहि पति बिनु वियोग संकल्प॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

॥ चौपाई ॥

सती हृदय दो भय उपजाई, प्रथम वियोग पती उर छाई।
दूजे शंक नारि कुल जाती, पति संकल्प पूरि केहि भांती।
तजि दोउ शंक न होहि वियोगा, कहि मुसकाय तजहु सब सोगा।
अंजनि गर्भ वायु हित द्वारा, निश्चय कीन्ह लेन अवतारा।
अमरावती इन्द्र रजधानी, रहहि पुंजकस्थल इक रानी।
गणना तेहिक अप्सरा मांही, कर्म प्रताप इक शाप धराहीं।
तेहि प्रताप भू-मंडल आई, वानरी रूप धारि विचराई।
सेवा कीन्ह अप्सरा भारी, ऋषि प्रसन्न होइ वचन उचारी।
जाहु रूप धरि जस मन भाहू, नारि वानरी हो जस चाहू।

वानर एक केशरी नामा, गृह पत्नी करि अति सुख माना ।
दीन्ह वानरिहिं अंजनि नामा, हर्षित परम पाय प्रिय भामा ।
एक समय मानुज तनु धारी, गिरि सुमेरु दोउ भ्रमहिं सुखारी ।
विधिगत पवन गात उड़ि जाई, बोलहिं अंजनि मातु रिसाई ।
पतिव्रत धर्म भ्रष्ट केहि कीन्हा, को असवीर चीर मम छीना ।
भस्म करन हित शाप विचारी, एहि प्रकार मुख वचन उचारी ।
वायुदेव कहि वचन सुवानी, मैं नहिं धर्म नष्ट मन ठानी ।
होहि पुत्रतुम मोहि समाना, बल बुधि गुण अरु विद्यासाना ।
अस प्रभु शम्भु गर्भ विच जाई, अंजनि मातु वीर कहलाई ।
दोहा--चैत शुक्ल की पूर्णिमा, भौमवार शुभ जानि ।
गर्भ अंजना शम्भु ने, वीर रूप प्रगटान ॥

रुद्र तन हनूमान की जय ।

पवन सुत महावीर की जय ॥

॥ चौपाई ॥

द्वितीय अध्याय

शुभ तिथि शुभ घट पा सुखदाई, अवसर पा अंजनि सुत जाई ।
अंजनि गृह उपजे असबाला, बलबुधि विद्या तेज विशाला ।
केशरी-गृह अति भये अनन्दा, सुनत नाम आये ऋषि वृन्दा ।
दर्श पर्ष करि होहिं सुखारी, देव मनुज जग सब नर नारी ।
लालन-पालन मिलि दोउ करहीं, केशरि अंजनि दोउ सिर धरहीं ।

अवसर पाइ पास पितु माता, लेन अहार गये जग त्राता।
क्षुधावंत आतुर अकुलाई, चहुं दिशि हेरि रहे बिलखाई।
लखि न परा फल फूल अहारा, गगन ओर तब दृष्टि पसारा।
समय सुहावन प्रातः काला, सूर्य अरुण नभ देखहिं बाला।
जाना सुन्दर लाल मनोहर, फल स्वादिष्ट जानि अति सुन्दर।
स्वयं पवनसुत तनु शिव अंशा, चित चंचल गति केशरी बंशा।
गगन ओर प्रभु कीन्ह पयाना, रवि रथ ऊपर जाइ चढ़ाना।
भानु जानि सब शिव करतूती, त्यागि तेज करि अति हित प्रीती।
गोद धारि पुनि खेलन लागे, बाल भाव भय सब उर त्यागे।
राहु तेहि दिन अवसर पावा, ग्रहण कार्यवश रवि पहँ जावा।
रथी बाल-मर्कट तहँ देखा, तेज पुञ्ज चञ्चलहु विशेखा।
ताहिं छांडि ते रवि पहँ गयेऊ, मर्कट ताहिं तुरत पकरेहू।
अति बल धारि धरणि पहं मारा, त्राहि त्राहि करि राहु पुकारा।
राहु इन्द्र कहँ कथा सुनाई, श्रवण तेहि करि नृपति रिसाई।
क्रोधातुर कहि पुनि तुम जावहु, भानु ग्रसित करि कें तुम आवहु।
आज्ञा पाइ गये पुनि राहू, लखि मरकट अस चित महं भाऊ।
क्षुधा ज्वाल तब भई कराला, जाना राहु मधुर फल काला।
दौरे राहुहिं खान कपीशा, भय आतुर होइ भागा खीशा।

दोहा—प्राणनु लै राहू गये, पहुंचे इन्द्र समाज।
करैं जोरि कर वीनती, मम बल नहिं अस काज॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

क्रोधवंत बोला अस राजा, दीन्ह डारि जल लाज समाजा।
को बालक जो मर्कट भेषा, को पितु मातु कवन उन देशा।
कीन्ह जाय रवि पहं जो छाया, चलहुं जाय देखों किन भाया।
आज्ञा पाइ रथी रथ लावा, सूर्य लोक तत् इन्द्र सिधावा।
ऐरावति हस्ती अति सुन्दर, ता ऊपर बैठहिं नृप इन्दर।
ताहि देखि मर्कट पुनि धावा, हो भयभीत इन्द्र सकुचावा।
मारा इन्द्र वज्र दुखदाई, हनु टूटी बालक गिरि जाई।
हनु टूटी बाहीं बल बीरा, मूर्च्छा खाय गिरा पुनि धीरा।
वायु देव तेहिं ठंह नियराये, उठा बाल निज गुहा सिधाये।

दोहा—क्रोधातुर हो इन्द्र पै, गती पवन करि बन्द।
काष्ठ रूप जग ह्वै गये, मनुज देव ऋषि वृन्द॥

रुद्र तन हनूमान की जय।

पवन सुत महावीर की जय।

॥ चौपाई ॥

कोलाहल भव भा बहु भारी, व्याकुल देव मनुज नर नारी।
तुरत इन्द्र ब्रह्मा पै धावा, सकल चरित तहं जाय सुनावा।
सुनि ब्रह्मा गति जग अकुलाए, तत्क्षण वायु गुहा ते आये।
करि स्पर्ष ब्रह्मा कर बाला, पुनि चेतन किये दीन दयाला।
राम राम कह बाल उठाये, अति प्रसन्न मुख उर हर्षाये।
वायु देव मन अति हर्षाई, सकल सृष्टि पुनि प्राण दिवाई।
शुभ अवसर लखि वचन उचारा, सुर ब्रह्मादि देव निर धारा।

साधारण ए बाल न होई, दे वरदान अभय कर सोई।
देव मनुज अरु रामहिं काजा, करन हेत जग आये समाजा।
दोहा—साधारण नहिं बाल एहि करन आये जग काज।
राम दास तन रूप धरि अंत होहिं कपिराज॥
वायू सुत अरु अंश शिव, पुनः केशरी नन्द।
प्रभुताई केहि मुख कहहुं, सोना सहित सुगंध॥

॥ सोरठा ॥

सोरठा—समय सुहावन जानि, ब्रह्मा अस भाखे बचन।
देउ सर्व वरदान, कृपा धारि एहि बाल पर।
रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

कहहि इन्द्र मम वज्रहि द्वारा, टूटी एहिकर हनुबड़ प्यारा।
अब हनुमान नाम एहि धरहीं, पुनि न वज्र इन्हते बल करहीं।
वज्र मोर अति कठिन कराला, तोरि न सकै धार एहि बाला।
दीन्ह सूर्य वर जगत दयाला, देहुं शत अंश तेज एहि बाला।
पुनि कहुं बाल जो शास्त्र बिचारै, मम बल शक्ति सकल उर धारै।
मन भावती देह धरि बालक, भ्रमै सकल जग निजकुल पालक।
वरुण कहहिं मम जलकर शापू, रहहु निशंक महेश प्रतापू।
धनकुबेर आदिक सब देवा, यथा शक्ति वर दै करि सेवा।
ब्रह्मा पुनि अस गिरा सुनाई, ब्रह्म शस्त्र तुम्ह लखि दुरिजाई।
ब्रह्मज्ञान दे अजरहुं कीन्हा, अभय अशंक रहहु वर दीन्हा।
देव समाज कहहिं अस भांती, अजर अमर होइहिकपि जाती।

दोहा—ब्रह्मा इन्द्र अरु रवि वरुण, वायु आदि पुनि रंक।
भिन्न भिन्न वर देइ करि, कीन्हा वीर निशंक।
रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय॥
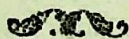
तृतीय अध्याय

॥ चौपाई ॥

कहहुं कथा बालापन वीरा, नटखट चञ्चल निपट अधीरा।
मर्कट बालक पुनि बलदाई, अंश रुद्र सेवक रघुराई।
ऋषि समाज कौतुक असकरहीं, कर मण्डल आसन जो धरहीं।
तिन्ह उठाइ कहुं के कहुं डारे, लंगोटादिक वसनहु फारे।
जाइ बैठ कबहुंक ऋषि गंदा, नोंचहिकेश दाढ़ि सिर बहुधा।
कौतुक लखि सब ऋषि हि रिसाई, सब समाज कहँ कवन उपाई।
सोच समाज ऋषिहिं अस कीन्हा, सहलंकारि शाप तिन्ह दीन्हा
जबलों याद धराहिं न कोऊ, भूलि जाहि बल बुधि अरु छोहू।
ता प्रताप मन भूल पराई, ज्ञान होहि जब याद दिवाई।
दोहा—ऋषि मुनि ऐसा चिन्त करि, दीन्हा अस शुभ शाप।
गुणावाद सुनि औरतें, उपजे बल बुधि आप॥
रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

॥ चौपाई ॥

विद्याध्ययन योग्य वय पावा, मातु पिता तेहि शाल पठावा।
गुरु स्वर व्यञ्जन कहें स्वरूपा, मर्कट भनै राम सब रूपा।
कीन्ह उपाय गुरू अति भारी, थकि पितु मात रहे आचारी।
निकट भानु पुनि दीन्ह पठावा, विद्या हित रवि लखि हर्षावा।
चार वेद षट शास्त्रहि संथा, लीला मात्र चले सब पंथा।
शनै शनैं विद्या सब धारी, मनुज समान अंश अवितारी।
होय सुशिक्षित पुनि गृह आये, मात पिता दोउ अति हर्षाये।
भानु प्रताप भये गुण ज्ञाता, गुण भंडार कीन्ह विधि दाता।
विद्याध्ययन है नाम अधारा, स्वयं शम्भु जानत जग सारा।

दोहा—ध्यान धारणा नाम की कीन्ही जग बल वीर।
पढ़े पढ़ाये का पढ़ै आप हि शम्भु शरीर॥

रूद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

पुनि अस कहूँ उमँगि अनुरागी, पुरी अयोध्या भई सुभागी।
विष्णु जन्म धरि राम कहाये, दुष्ट दनुज भंजनहित आये।
लीला भाव धारिं उर शंकर, देखन हित आवहिं लै अन्तर।
कबहुंक ज्योतिषि बनि कै जाई, कबहुंक भिक्षुक वेष धराई।
सामुद्रिक बनि प्रभु कर गहेऊ, देखि शुभाशुभ कहि हर्षेऊ।
भिक्षुक बनि देहिहिं आशीशा, शिशु बनि तर्क बढ़ावहि ईशा।
एक दिवस अस अवसर आवा, मर्कट एक मदारी लावा।

नाच नचावत डमरू बाजा, नाचहि मर्कट तजि सब लाजा।
बाल अनेक और जुरि आये, देखि रीझ पुनि सब घर धाये।
दोहा—नाचे आपु नचाइ आपु, देखन हारे आपु।
अद्भुत लीला रामकी समुझि त्याग संताप॥

रूद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

हो प्रसन्न हठ राम धराई, एहि बानर कहँ मैं लै जाई।
बालक हठ हठि टरै न टारा, एहिलखि नृप अस वचन उचारा।
देहु द्रव्य जो कहै मदारी, मर्कट लेहु पुत्र हितकारी।
एहि सब लीला शम्भु प्रतापू, आपहिं नचै नचावै आपू।
दिखै आप अपु देखनि हारा, प्रभु की लीला अपरम्पारा।
कौनै मर्कट कौन मदारी, लीलावत माया त्रिपुरारी।
बानर लेइ राम घर जावा, नचवनिहार न फेरि दिखावा।
होइ अलक्षित तहां मदारी, मानों काय कपिहिं तेहि धारी।
स्वयम् शम्भु बानर बनि आए, होय मदारी आपु नचाये।
दोहा—स्वयम् शंभु एहि भांति सों बानर रूप बनाय।
खेलहिं कूदहिं राम संग हिये अधिक हर्षाय॥
मनहुं मदारी करि गये रामहेत निज काम।
या प्रविष्ट हो काय कपि लीन्हा जा विश्राम॥

रुद्र तनु हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

चतुर्थ अध्याय

रामवीर बहु काल समीपा, मन रंजन रस लैं रघुदीपा।
विश्वामित्र समय जब पावा, भूपनिकट आ सुतहिं मँगावा।
राम वीर तें कहं सब भेदा, गुप्त रूप बनि दोउ अभेदा।
अन्तरंग तुम्ह सखा सुजाना, सब चरित्र भावी तुम्ह जाना।
रावण वध हित तुम्ह हम आवा, जाहु शक्ति धरि कार्य करावा।
समर हेत वानर बहु कीजै, पुनि रावण बध करि यश लीजै।
एक रूप तन हम तुम्ह दोऊ, कार्य एक भावी वश होऊ।
रावण सखा बालि जग होई, खरदूषण त्रिशिरा सुनि सोई।
सूर्पनखा मारीचि सुबाहू, हैं बहु वीर जों दुष्ट सुभाऊ।

दोहा—इनहि हनै तब होइहै, तुम मम जग कल्यान।
आज्ञा तुम्ह सिर धारि कें जाहु वीर हनुमान॥
लखां भाव स्वामी तुम्हें मोहि लखौं तुम्ह दास।
अस विचारि कहैं वीरजी पूर्ण होहिं सब आश॥

रूद्र तनु हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

राक्षस जाल ओर चहुं छावा, शवरी मिलि ऋषिमूकहुजावा।
मिलि सुग्रीव करी बहु मीती, मिलहु मोहि पुनि जानि सुनीती।
बहु दल लै बानर तुम्ह आऊ, जनम हेतु मम पूर्णकराऊ।
आज्ञा पाइ गये पुनि वीरा; मिलि सुग्रीवहि गई तन पीरा।

अनायास दोउ वीरहिं देखी, लखि शुभ रूप वीर सुविशेखी।
कहै सुग्रीव कवन एहि जाऊ; जाइ भेद इन्ह करि सब लाऊ।
द्विजकर रूप धरा बल वीरा; पहुंचे जा दोउ वीरनि तीरा।
पूछहिं आप कवन ? गृह-चारी ? केहि हित रूप धरेहु ब्रह्मचारी।
निर्जनबन बिच तुम्ह कस आवा, सकल भेद मोहि सत्य बतावा।
दोहा—द्विज स्वरूप प्रभु देखि करि, कहहिं अनुजसन बात।
एहि द्विज मोहि अस भासई, बुद्धिवान बहु ज्ञात॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

नयन सैन पा लक्ष्मण कहेऊ, हम दशरथ सुत भ्राता दोऊ।
भावी वश हम वनहिं सिधाये; जनकनन्दिनीहू संग लाये।
रावण दुष्ट भयङ्कर भारी; खल हरि लैगा जनक दुलारी।
तेहि खोजन हित इहां सिधारे; करहु सहाय स्वयं अनुसारे।
सुनत वचन दुखमय बलवीरा; बदल काय तेहि पद गहे धीरा।
चरण कमल गहि रुदन कराई; वीर पकरि प्रभु उरहिं लगाई।
द्विज कपि भया लखै रघुराई; प्रकट अजान गुप्त हर्षाई।
कहैं रघुराइ करहु मम काजा; तुम्ह जस बुधिविद कपिहिं समाजा।
द्विजतें कपिकर रूप बनावा; ताहितें हृदय वीर दुख छावा।
अन्तर्यामी प्रभू प्रवीणा; तिन्ह सम्मुख मैं कपटहु कीन्हा।
दोहा—वीर धीर अकुलाइकें; कहैं जोरि कें हाथ।
कपट मोर उर ना धरौ; धरो चरण पै माथ॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

कहैं वीर मम इक अरदासू; है सुग्रीव दर्श अभिलासू।
अति भयभीत रहें तन शंका; प्रभु करि कृपा करहु निश्शंका।
दोउन कंध वीर धरि लावा; जा सुग्रीव निकट बैठावा।
दोउन परस्पर भा सतकारा; वीर दीन्ह प्रभु परिचय सारा।
सुनि सुग्रीव पाद प्रभु लेवा; कहु प्रभु मोहि उचित जो सेवा।
मैं भयभीत बालि करतूती; करहु दूर दुख मम एहि बिनती।
बालि मारि दुख दूरहि कीन्हा; भा सुग्रीव अभय पद चीन्हा।
करन हेत तेहि कर निस्तारा; अग्नि समक्ष सखा निर्धारा॥
वानर भूप किया निज दासा; चतुर मास गिरि कीन्ह निवासा।
दोहा—करि निश्शंक सुग्रीव को; बानर भूप बनाय।
चतुर मास प्रभुतहं रहे; देखि गिरा हर्षाय॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

पंचम अध्याय

जामवंत अंगद नल नीला; सब मिलि यत्न करहिं प्रभु लीला।
तिन्ह बहु कपि चहुं ओर डुलाई; मासगये बहु सुधि नहिं पाई।
कीन्ह सभा मिलि सकल समाजा; कवन बली जो करिहिं काजा।
प्रथक् प्रथक् सब बानर कहेऊ; हम असमर्थ सत्य अस भनेऊ।
जामवंत देखा बल वीरा; कवन हेत तुम्ह सोचहु धीरा।

तुम्ह अति वीर तेज गुणखानी; बुधि विद्या सब उरहि धरानी।
रुद्र अंश अरु केशरी नंदा; तव गुणगान करहिं ऋषि वृन्दा।
जाहु लाउ तुम्ह सुधि मां सीता, करहु स्मर्ण निज बलबुधि मीता।
दोहा—बल बुद्धि और तेज को कीजै तुम्ह कपि याद।
तुम्ह समान जग और को कहूं वचन निर्वाद॥
जामवंत के वचन सुनि वीर भये विक्राल।
महिमा सुनि गुण आपकी कीन्हा रूप विशाल॥
रूद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।
चले 'राम जय' ध्वनिकरि वीरा; चढ़ी गिरा जिमिगगन समीरा।
दक्षिण ओर दास रघुराई; आवति देखि सिन्धु अकुलाई।
तेहि संदेश मैनाक सुनावा; केहि हित राम दूत इत आवा।
करि श्रम जाहु देहु विश्रामा; राम दूत निश्चय बल धामा।
जा मैं नाक कहै कर जोरी लै विश्राम करहु गति मोरी।
कहैं वीर जाना तुम्ह प्रेमा; प्रथम काज प्रभुकरहुं सुनैमा।
यदपि शरीर रहे तुम्ह पासा; करै चित्त मम लंक निवासा।
सीता मातु दर्श जब पाऊं; हरषि चित्त पुनि तुम्ह पहं आऊँ।
असकहि वचन केशरी नन्दा; चले धारि उर आनन्द कंदा।
दोहा—हृदय धारि श्रीराम को वीर चले हर्षाय।
आगे पुनि सुरसा मिली भागदेव की माय॥
रूद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

सुरसा सिंहिका नारि अपारा; मिलो लंकिनी रूप पसारा।
नाना रूप धारि करि वेषा; अंत लंक जा कीन्ह प्रवेशा।
भिन्न भिन्न बहु महलनि जाई; मिलो न मा उर खेद समाई।
पुनि कपि एक वाटिका माहीं; जा सीता पद शीश नवाहीं।
कुशल कही श्रीराम प्रभू की, मनहुं दई सम्पति सब भव की।
बार बार सीता पद लेई, राम मुद्रिका पुनि कपि देई।
देखि मुद्रिका अति हर्षाई, दे अशीश बहु कीन्ह बड़ाई।
क्षुधावंत कपि मां सन कहईं, खावन फलन आज्ञा लहईं।
लखि जननी अस अति लघुधारा, रावण भय नहीं वचन उचारा।

दोहा—सीता उर भय मानिके कहे न कपि सन बैन।
कपि स्वभाव उर धारिके आपु चले फल लैन॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

जाना कपि आज्ञा मैं पाई; तजि भय बाट बाटिका जाई।
देखी वीर लंक अति भारी; केहि विधि रावण होइ दुखारी।
कस उपाय रावण चित क्रोधा; उपजि तेज करिहै सुविरोधा।
वीर विचार कीन्ह बहु भारी; जाइ वाटिका सुगढ़ उजारी।
सुन्दर सकल वृक्ष फल फूला; भूमि डारि दीन्हे सह मूला।
दूत दशानन पं तब जावा; बानर कौतुक जाय सुनावा।
क्रोधित ह्वै इमि गिरा उचारी; लै सँग जाहु सुभट बलकारी।
लाउ पकरि कौतुकमय बानर; धाउ बेगि ले आउ सुआदर।

दूत जाइ कपि विकट समीपा, उचित कीन्ह जस कहा महीपा ।
साम दाम भय कपिहिं दिखावा; रामदूत उर नेकु न भावा ।
दास दशानन पुनि ललकारे; रामदास करि गरज पछारे ।
रावण दूत सबै तब भागे; कथा जाइ कहि भूपहि आगे ।
रावण रूप भयङ्कर धारी; है यह बानर को त्रिपुरारी ।

दोहा—है बानर कस रूप में भूप कही अकुलाइ ।
मेघनाद सन इमि कहा बांधि लाउ तुम्ह जाइ ॥

रुद्र तन हनूमान की जय ।
पवन सुत महावीर की जय ।

षष्टम अध्याय

॥ चौपाई ॥

मेघनाद पुनि बागन जाही; वीरहिं बल करि बांधन चाही ।
इन्द्रजीत जूझा बल धामा; छल बल कला करें नहिं कामा ।
जब भट हारि परा मन माहीं; ब्रह्म शस्त्र ताना तेहि पाहीं ।
ब्रह्म शस्त्र लखि वीर विचारा; को मोहि बांधि सकै संसारा ।
जो घटि जाइ शस्त्र प्रभुताई; मोकहं कोप करैं रघुराई ।
अस विचारि रावण सुत साथा; बंधि कर चले दूत रघुनाथा ।
सभा जाइ देखी अति भारी; भय न हृदय मुख तेज अपारी ।
कहैं दशानन रे कपि ढीठा; तोहि न होहि प्राण कै मीठा ।
केहि के बल वाटिका उजारी; केहि अपराध सैन मम मारी ।

मम बल तें नहिं हृदय विचारा; कटकटाइ निशिचर ललकारा।
कहा वोर मैं निर अपराधा; लागी भूक न मानी बाधा।
दास तुम्हार मोहि जब मारा, मैं हूं तिन्ह कें दीन्ह पछारा।

दोहा—तुम्ह हित जग तुम्ह भय बड़ा; ममहित क्षुधा अपार।
रामदास प्रभु काज तें बँधा परा तुम्ह द्वार॥
क्षुधा सताई मोहि जब खोजन गया अहार।
मां आयसु सिर धारि कें गा उद्यान मझार॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

रावण सुना कपिहिं हरिदासा; आन लगे उर ऊर्ध्वउसासा॥
हिरदय करहि विचार अनेका; भया योगमय कीन्ह विवेका॥
शंकर अंश रहा इक शेषा; आये कपि वपु धारि महेशा।
कहा वस मोर करूं इन्ह सेवा; केवल शीश दिये दश देवा।
तिन्हैं काटि पद शंभु चढ़ाई, शेष रुद्र हित मैं सकुचाई।
सो धरि रूप करन निरवंशा; आवा शंकर शेष सुअंशा।
मोकहं सोच करन नहिं नीका; बिनुतप मिलै मुकति एहि लीका।
योग जुगति तिन्ह सबहिं विचारी, प्रकट न कीन्ह हर्ष चित भारी।
कहि हर्षाय मनहि मन बैना, राम दास देखा निज नैना।

दोहा—मुक्ति हेत शिव सेइ करि, लीन्हा अस वरदान।
त्रेता राम जु आवहीं, होइ सकल कल्यान॥

मन ही मन अस चिन्त करि, रहे अधिक हर्षाय।
काल सुहावन है इहै, राम लोक हम जाय॥
रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

कहि विचारि रावण अस नीती, मारहु मर्कट तजि भय प्रीती।
कही सचिव अरु भाइ विभीषण, हैं अस दंड नीति करदूषण।
दूतन्हि प्राण दण्ड नहिं देखा, नावैं माथ विनय सविशेखा।
लघु अपराध न ध्यान धरेऊ, पूंछ जराइ अभय करि देऊ।
कहैं वीर तुम्ह रूहू लावहु, पूंछ बाँधि मम तेल सिंचावहु।
पजरै आगि पाइ रुख व्यारा, जरहि पूंछ होइ हर्ष तुम्हारा।
जेहिविधि कपि तिन्ह विधी बताई,तेहि भांतिकरि अनिल लगाई।
लगत अनिल कपि तब ललकारा, कूदि फांदि गये द्वारहि द्वारा।
जाइ सकल गढ़ लंका जारी, कूदे सिंधु अंत अवतारी।

दोहा—वीर रूप कपि धारि के नाश कीन्ह सब लंक।
हाहाकार मचा नगर, दुखी भूप अरु रंक॥
वीर अतुलबल जाइकें पुनि माता के पास।
चूड़ा मणि लघु चिन्ह लै चले राम कर दास॥
रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

जामवन्त अंगद सब वानर, देखहिं बाट वीर कै सादर।
करहिं एक पद दृग पथ ध्याना, किलकिलाइ गर्जें हनुमाना।

वीर देखि सब उर हर्षाई, एक एक करि हृदय लगाई।
पुनि सब सिमिटि गये प्रभु पाहीं, वीर तिन्हहिं सब कथा सुनाही।
मातु कुशल कहि निज कुशलाई, रावण भट कर कहि प्रभुताई।
कहि प्रभु मैं कपि ऋणी तिहारा, कवन उपाय होय निस्तारा।
हृदय लगाय दीन्ह वरदाना, अटल भक्त होवहु हनुमाना।
जेहि कारण तुम्ह रूप धरावा, सो अमोघ वर कपि तुम्ह पावा।
चरण कमल गहि प्रभु हितकारी, वीर निशंक भये सुविचारी।

दोहा—हनूमान ने राम सन भिन्न भिन्न कहिं बात।
अटल भगति वरदान लै गये चित्त हर्षात॥
सर्ब गुनन तें अधिक गुन, वीर रूप दर्षाय।
तनिक प्रेम हू वीर का, राम चरन ले जाय॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महवीर की जय।

सप्तम अध्याय

॥ चौपाई ॥

देव मनुज सुख कारज कीन्हे, बाली जामवन्त प्रिय चीन्हे।
अंगद आदि विभीषन जैसे, सुरसा सिंहिका त्रिजटा कैसे।
लच्छमण प्राण दान तिन्ह दीन्हा, वैद्य सुषेण लाइ उन्ह दीन्हा।
रामचन्द्र की विपति निवारी, कष्ट अनेक आपु तन धारी।
सीता खोज लगा पुनि आवा, रामचन्द्र चित शोक भजावा।

आपु अशोक वाटिका जाई, मातु हृदय जा धीर धराई।
नागलोक अहिरावण जाई, राम; लषण दोउ बन्धु उठाई।
खल तिन्ह निज भुज धारि पराई, देन सुभग बलिकालिहि माई।
ए छल जानि पवनसुत गर्जा, बलि विध्वंसि कीन्ह अति तर्जा।
दोहा–नागलोक में जाइके धरि सिर देवी पाद।
राम लषण भुज धारि के किया घोर बहुनाद॥
भूमि तले देवी गई छमविऽरु भक्षण कीन्ह।
दोउ वीर भुज धारि के पंथ स्वदेशहि लीन्ह॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

रावण बांधि लिये शनि देवा, तिन्हहिं मुक्त करि की बड़ सेवा।
समय सेतु बांधन तब आवा, बहु गिरि उठा वीर तब लावा।
भया पूर्ण बांधन कर काजा, धरे रहे कपि भुज गिरि राजा।
पर्वत राज सुगिरा उच्चारी, कपि मोहि देहु भूमि पर डारी।
मोहि कृतज्ञ करहु बल वीरा, दरश कराइ देउ रघुवीरा।
धरि गिरि भूमि प्रभू पह जावा, गिरिकर विनती सकल सुनावा।
कहा प्रभु रूप मनुज मैं धारूं, कृष्ण नाम धरि ताहि उबारूं।
सप्त दिवस अँगुली धरि लेऊं, आपन रूप दास करि देऊं।
हैं प्रभु अस दयाल रघुवीरा, गिरि तारन हित धरहिं शरीरा।
दोहा–गिरि को प्रभु ने पद दिया, नाम धरा गिरिराज।
ए महिमा सब वीर की, भक्त हेत किये काज॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

अष्टम अध्याय

॥ चौपाई ॥

विजय पाइ पुनि प्रभु फिरि आई, योधागण कर कीन्ह विदाई।
जामवंत अंगद बहु वानर, दये विठाय सकल सह आदर।
बहु उपहार प्रभू सब दीन्हे, कपि सब हर्षि हर्षि तिन्ह लीन्हे।
कृपा दृष्टि करि वीर न देखा, सभा मांहि भा सोच विशेखा।
सब ते अधिक दास रघुराई, केहि हित राम वीर त्रिसराई।
राम जानि अस चरित सुहावन, लखैं वीर मन अति हर्षावन।
राम वीर दोउ मर्म छिपावा, आदि शक्ति उर सब कछु आवा।
मुक्त हार गल आपु उतारा, निज कर हार वीर उर डारा।
लखि एहि चरित सभा सुखदाई, प्रकट न वीर नेंकु हर्षाई।
दोहा—मुक्तहार गल डारि कपि अति प्रसन्न मुख होहि।
देखि दिखावहि सबन कहँ, दीन्ह भवानी मोहि॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

पुनिकपि भाव कपिहिं उरआवा,उलटि पलटि तिन्हभूमि गिरावा।
पुनि पाषाण लाइ दो भारी, करि विभाग दो उरहिं निहारी।
शून्य पाइ उर फेंकन लागा, सकल सभा कहि एहि कपि रागा।

कस अनमोल रतन तुम्ह पाई, कपि स्वभाव शठ धूरि मिलाई ॥
सत्य अहै एहि जगकर वादा, कपि नहिं जानहि अदरक स्वादा।
कहँ वीर जग राम स्वरूपा, ता हित तोरि लखा प्रभु रूपा।
पर नहिं राम मुकुत मँह पावा, सब लखि तोरि अन्त बिसरावा॥
करि कटाक्ष कोउ बोलहि बानी, तव अयोग्य वच ऐ अभिमानी।
जिह्वा राम भनन हित होई, उर प्रभु रूप लखा नहिं कोई॥

दोहा—राम नाम जिह्वा भंनत उर देइहि तन श्वास।
अस निश्चय भ्रम तुम भया, अरु मिथ्या विश्वास॥
उर मज्जा अस्थी रुधिर करिहैं सदा निवास।
मिथ्या वचन बखानि कै, बनत रामकर दास॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

भक्त वीर सुनि वच अकुलाई, दोउ कर चीरि उरहिं दिखराई॥
राम रूप अंकित उर पावा, अटल भक्त लखि सब मुरझावा॥
दर्शन पा सब भये सुखारी, जय जय ध्वनि करिहैं नर नारी।
ऋषि मुनि वृन्द पुष्प बरसाहीं, देव मनुज अतिचित हर्षाहीं॥
अटल भाव भक्ती अस होई, वीर राम जाने नहिं दोई।
उर में राम गात में वीरा, अस गति धारि चलहु मन धीरा।
शुद्ध पवित्र धाम करि लेहू, रागादिक उर सर्व नशेहू।
शांति चित्त उर भक्ति समीरा, अष्ट प्रहर उर रहे गँभीरा॥

दोहा—स्वामी सेवक अरु सखा एक रूप बनि जाय
भरम भाव सब त्यागि के वीर रूप होइ जाय।

रूद्र तनु हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

नवम अध्याय

॥ चौपाई ॥

जगत जननि माता इक बारा, कीन्ह मुदित मन अंगसिगारा।
केश मांग सेंदुर शुभ धारा, निज कर अर्ध सिंगार उतारा।
कपि मुख लेप कीन्ह करि दाया, ताहिं भांति सब अंग सजाया।
तेहि प्रमाण जग लै सिंदूरा, तेल मिलाय चढ़ावहिं वीरा।
कोउ कोउ लै घृत करहि सिगारा, मंत्रादिक बिचतैल सुप्यारा।
सिर धरि वीर चढ़ा सब अंगा, मातु कृपा कपि भये सुरंगा।
जगदंबा कर एहि प्रसादा, लेपहिं कपि तजि सकल विषादा।
चरण सिंदूर वीर का लावै, श्रद्धा धरि निज शीश चढ़ावै॥
जगभय होय न काहु प्रकारा, नाशै दारिद होइ सुख भारा।

दोहा—पग प्रसाद जो लाइके अपने शीश चढ़ाइ।
दुख दरिद्र सब दूर हो अन्त वीर पद जाइ॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

परमारथ तिन्ह कीन्ह अपारा, जेहि विख्यात सकल संसारा।
कवन विज्ञ मुख करै बड़ाई, शेष शारदा रहे लजाई।
राम वीर शंकर सब एका, भिन्न भनै शठ अति अविवेका।
सखा दास स्वामी सब आपू, लीलाहेत चराचर व्यापू।
धरहिं रूप जग हित कल्याना, आपहिं राम शंभु हनुमाना।
एक जानि करिहै सेवकाई, सत्य सत्य भवसिंधु तराई।
नाथ चराचर करहुँ निहोरा, मातु पिता तुम्ह मैं मति भोरा।
केवल देहु एक वर मोही, कठिन न होइ काजु कछु तोही।
भेद भाव अंधेर अविद्या, नाशि सकल मोहि देहु सुविद्या।
दोहा–राम दास स्वामी जगत, कीजै मम सम भाउ।
इच्छा आन न मोर उर, भव तें पार लगाउ॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

कहहुँ सूक्ष्म करि वीरहिं गाथा; प्रभु उर धारि सुनहु मम नाथा।
मैं अजान अनपढ़ अल्पज्ञा, करहु कृपा प्रभु सम सर्वज्ञा।
उर न ज्ञान विद्या कविताई; करहुं विनय लखि तव प्रभुताई।
महावीर मण्डल बिच आऊ, सकल वीर निज रूप बनाऊ।
श्रद्धा भक्ति हृदय सब आवै, तुम्ह समान दूजा नहिं भावै।
आपहि राम आप हनुमाना, बनहु सर्व जगहित कल्याना।
होंहिं परस्पर सब हितकारी, आवै समय होंहि सुखकारी।
हृदय न आन वांछा मोरी, हृदय बसहु प्रभु मम मति थोरी।

दोहा—सकल पदारथ जगत के पावै नर निरधार।
श्रद्धा भक्ती उर धरै तबहि होइ भव पार॥
शिवानन्द कर जोरि के करै बिनय बहु बार।
कुटिल भाव मम त्यागि के, कीजै भव से पार॥

रूद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

दशम अध्याय

॥ चौपाई ॥

प्रभु तुम्ह कीन्हे काज बड़नके, सोचि रहे किमि धन निधनन के।
यदपि धनी हो तुम्ह बड़ भारी, पर मैं हूँ अति दीन भिखारी।
देखि दीन अति सकुचि न जाना, माँगहुं भिक्षा वित्त समाना।
निज सम्पति राखहु निज पासू, जस सुख मोर पूरि मम आसू।
जस भिक्षुक धनपति ढिग जाई, अधिक वित्त मांगत सकुचाई।
नहिं मोहि जग सम्पति अभिलाषा, पूर करहु प्रभु मम उर आशा।
एक तुम्हार भक्ति उर होई, एहि वरदान देहु प्रभु मोई।
अहम् भाव उर सों प्रभु खोई, एक रूप देखों सब कोई।

दोहा—करहु भाव अस मोर तुम्ह, तब जानहुँ सतवीर।
कटैं जार उर दुइ तजै, तब होइहि मन धीर॥

रूद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

अटल भक्ति होइ तब कल्याना, होइ सत्य पद लहि निर्वाना ॥
ब्रह्म जीव दोउ भरम निकारै, सेवक स्वामि एक तनु धारै ।
दिव्य दृष्टि सेवक जब होई, स्वामी रूप लखै सब कोई ।
यावत हृदय न होइ उजारा, द्वैत भाव दीखै उर सारा ।
सत्य प्रेम भक्ती उर होई, एक रूप देखै सब कोई ।
प्रकृति सुभाव व्यक्तिगत भेदा, माया मय सुख हैं सब खेदा ।
बहु उपकार वीर जग कीन्हा, ब्रह्म ज्ञान जग निज उर चीन्हा ।
हृदय वीर सम होइ जग जाकू, मिटै भरम भाखै सब आपू ।

दोहा—विदा समय श्री वीर ने भक्ति रूप दे ज्ञान ।
मनुज रूप जग चरित करि, ह्वै गये अन्तर्धान ॥

रुद्र तन हनूमान की जय ।
पवन सुत महावीर की जय ।

एकादश अध्याय

॥ चौपाई ॥

भनै धारि भक्ती एहि गाथा, सो होइ कृपा पात्र रघुनाथा ।
वीर कृपा बल हरि पद जाई, पद निर्वाण लहै हर्षाई ।
जो इच्छा उर में नर धारै, सफल वीर करि सब भय टारै ।
विघन विपति नाशहिं बल बीरा, धनदारा सुत देइहिं धीरा ।

पाठन पठन जहाँ इहि होई, भूत पिशाच भगें सब कोई।
वीर भक्त निर्भय मन होई, उर न आव शंका तिन्ह कोई।
होइ निर्धन अथवा बिनु पुत्रा, हो दयाल देइहैं बनि मित्रा।
डाकिनि शाकिनि पास न आवैं, जा गृह गाथा पढ़ैं पढ़ावैं।

दोहा—इहि गाथा हरि दास की महिमा को कवि गाइ।
शिवानन्द द्विज मूढ़ को, वीरहिं पार लगाइ॥

रुद्र तन हनूमान की जय।
पवन सुत महावीर की जय।

नित प्रति पाठ करै इक वारी, टरहि व्याधि संकट भवसारी।
अल्प आयु नर करै जो पाठा, मृत्यु न होइ बढ़ै भव ठाठा।
होइ हृदय लक्ष्मी जिन्ह इच्छा, करहिं प्रयोग लेइँ गुरु दिक्षा।
पढ़ै वार शत धरि विश्वासा, ऋद्धि सिद्धि पावै षट् मासा।
सहसवार एहि पढ़ै पढ़ावै, संवत एक मांहि सब पावै।
जग सुख सम्पति तृणहिं समाना, भासै तिहिं महिमा बलवाना।
पाठ क्रिया कछु होइ न आना, अटल भक्त होइहि तजि माना।
एक रूप भावै संसारी, सकल सार जीवन हितकारी।

दोहा—कल्पान्तर भटकत रहे जीवित रह जग मांहि।
बिना दर्श श्री वीर के आयु वृथा गँवाहिं॥
प्रभुताई प्रभु की अधिक जेहिं उपजा अस ज्ञान।
सिया राम हनु कृष्ण शिव एकहि रूप महान॥

बलिहारी बलवीर की कीन्हा शुद्ध स्वभाव ।
शिवानन्द भ्रम उड़ि गया भया एक रस भाव ॥
राम कृष्ण शंकर उमा सबही दीनदयाल ।
पर नर धारे प्रबल तप तब प्रभु हौंय कृपाल ॥
वीर रूप महिमा अधिक जागे कपि तत्काल ।
दुख दरिद्र भव दूर करि क्षण में करत निहाल ॥
शिवानन्द द्विज दास यह आन गह्यो तुम द्वार ।
तुम्ह समान दूजा नहीं कीजे बेड़ा पार ॥
वर्ष बहत्तर आयु में उपज्यो उर तुम ज्ञान ।
बल प्रमाण महिमां कही सुनहु सुवीर सुजान ॥
दो सहस्र दो विक्रमी सम्वत शुभ तुम जान ।
चैत्र शुक्ल की पूर्णमा लीला करी बखान ॥

रुद्र तन हनूमान की जय ।
पवन सुत महावीर की जय ।

* इति शुभम् *

पाठ के लिये विशेष सामिग्री

गई बहोरि गरीब निवाजू, सरल सबल साहिब रघुराजू।
दीनानाथ विनय इक मोरी, जो चाहो सो कर गति मोरी।
दीनदयाल विरद संभारी, हरो नाथ मम संकट भारी।
आरतहरण वेद प्रभु गावा, प्रणतारत प्रभु नाम धरावा।
यह वर मांगहुँ कृपा निकेता, बसहु हृदय सिय अनुजसमेता।
महावीर जग जगत के स्वामी, बारम्बार नमामि नमामी।

मां के दुलारे वीर

भारतवर्ष प्रकृति देवी का सब से अधिक दुलारा देश होने के कारण यहाँ कभी किसी वस्तु का अभाव नहीं रहा, यहां पर खाद्य सामिग्री इतनी सुगमता से और प्रचुरता से मिलती रही है कि यहां के निवासियों को उसकी प्राप्ति के लिये शीत प्रधान देशों की भांति कभी कठिन परिश्रम नहीं करना पड़ा। ऐसी दशा में लोगों का ध्यान दो बातों की ओर जाता है, या तो शृङ्गार या धर्म। धर्म ने ही इस देश को आज तक जीवित रखा है और रखेगा भी।

यहां की रत्न गर्भा मेदिनी पर विदेशियों का सदा से दाँव रहा है। कुछ आक्रान्ता तो आये और धन माल लेकर चले गये पर पीछे से कुछ ऐसे भी आने लगे जो इसी प्रकृति क्रीड़ा स्थली में बसने भी लगे। जब आक्रान्ताओं के अत्याचार बढ़े तो लोगों के धर्म कर्मों में भी

बाधा पड़ने लगी। और ऐसे कठिन अवसरों पर धर्म मर्मज्ञ, मां के लाड़ले, आन के पूरे, चरित्र के उज्ज्वल तथा त्याग की मूर्ति ऐसे-ऐसे वीर पुङ्गवों ने अवतार लिया कि जो अपना सर्वस्व त्याग कर अपने देश और जाति की मान मर्य्यादा के लिये कटि बद्ध हो गये। भारत के इन सपूतों ने भारत की निराश जनता में वीरता की आग फूंक कर आशा का प्रकाश कर दिया। व्यथित तथा अकर्मण्य हिन्दू जनता का उन्होंने मार्ग प्रदर्शन किया और उनमें अपने संस्कृति-जन्य वीर भाव को पुनः जाग्रत कर उनमें इतना वीर्य और शौर्य भर दिया कि दुराचारी आक्रान्ताओं को इनके आगे मुंह की खानी पड़ी।

भारत आकाश के इन सदैव जगमगाते रहने वाले तारों में छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, गुरु नानक जी, गुरु तेग बहादुर तथा गुरु गोविन्दसिंह जी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। ये पाँचों निस्स्वार्थ अपूर्व आत्मा ऐसी हुई हैं जिनके कारण हिन्दुस्थान में हिन्दुओं का मान तथा उनका अस्तित्व अमिट है। इनकी जीवनियाँ हमारे जीवन में स्फूर्ति तथा हमारी धमनियों में वीरता के रक्त का प्रवाह करने में समर्थ हैं। हमारा देश ऐसे वीरों पर गर्व कर सकता है।

इन्हीं पाँचों वीर शिरोमणियों की संक्षिप्त जीवनियां हमने दोहा और चौपाइयों के रूप में लिखी हैं, जिन्हें पढ़ कर हृदय आनन्द श्रद्धा और वीरता के भावों से ओत-प्रोत हो जाता है। प्रत्येक हिन्दू को चाहिये कि इनकी जीवनियों को अवश्य पढ़े और उनसे बल व वैभव प्राप्त करे।

हरिहर प्रेस, चावड़ी बाजार, गली बजरङ्गबली, देहली।